





118 قس 15

|               |  |
|---------------|--|
| ASHA ARCHIVES |  |
| 1.082         |  |
| ASHA ARCHIVES |  |



काश्यपगोत्रास्मत्समसाधवत्सालनामधेयस्य श्रीसोमदेवतासु  
प्रसन्नद्वाराजन्मनिवृश्चिकलगतस्थितसोमग्रहेण जडभ्रमद्रा  
रिद्रादिदोषशान्तिर्थपुनःधर्तृप्राप्तिकामतार्थं श्रीसोमदेव  
तासुप्राप्तये सोमव्रतनिमित्तार्थं देवहन्मानवे इदमर्घ्यनमः

रुक्मिणीगच्छाम्यनमः॥ श्रीसामायनमः॥ अथ सामव्रतविधिलिखितं ॥  
क्रां पांपद्मासनवाय ॥ कंसपाणसुवद्यमास्त्रापनयाय ॥ अर्घपाणयातवाकिवाय ॥  
अर्घपाणसुपनं ॥ पूषयाय ॥ आचमनयाय ॥ चंदनशृङ्गस्वातीवज्जनाय ॥  
श्रीसूर्यायातसूर्यार्घयाय ॥ अथादि ॥ वाक् ॥ काश्यपगोत्रास्मत्समसाधवत्सालनाम  
धेयस्य समप्रसन्नद्वाराजन्मनिवृश्चिकलगतस्थितसोमग्रहेण जडभ्रमद्रा  
रिद्रादिदोषशान्तिर्थपुनःधर्तृप्राप्तिकामतार्थं श्रीसोमदेवतासुप्राप्तये सोमव्रतनिमित्तार्थं देवहन्मानवे इदमर्घ्यनमः ॥ पुण्यनमः ॥



ध्यानमः॥ देवस्तानं पंचमृगनस्तानं॥ साधोसा इस्तानं॥ उत्तमस्तानं॥ दैवत  
 सिंहनकुंकास्तानं देवकायपं॥ आचमनयाना न्यासायासा॥ ॐ नमः सामा  
 यश्रुताय रुत॥ ॐ शृंगुष्टाय नमः॥ ॐ गजनेत्राय नमः॥ ॐ मध्वाय नमः॥ ॐ सांभना  
 मिकाय नमः॥ ॐ कनिष्ठाय नमः॥ ॐ यश्रुताय रुत॥ हृदयादि॥ ॐ सामय हृद  
 काय नमः॥ ॐ चन्द्राय निनस स्वाहा॥ ॐ नंद उभयगिरिवाये वीरव॥ ॐ विष्णवे सोमि  
 नकवचाय ह्रीं॥ ॐ श्रमृगकलाय नमः॥ ॐ उग्रयाय वरुणा॥ ॐ पूर्णचन्द्राय नमः॥ ॐ  
 अध्याय पूजा हृदयादि॥ आवाहनादि॥ आत्मपूजा॥ ध्यानध्यानं॥ ॐ कुंकुम  
 संकाशं रत्नपद्मकनकद्वयं॥ प्रकाशं दीर्घसांभं रत्नं मणि रत्नं॥ सकलं सवि

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

मानसं ग्राहिष्ठा सहितं सुगं॥ सलकि मायुधः सागंकलाया उत्तरि र्युगं॥ नवंधनः  
 स्वानिष्मनाथं रयस्मा सनामहिः॥ आत्मन ध्यान पूष्यं नमः॥ ध्यानपूजा॥ ॐ अध्वन  
 लकथनमः॥ ॐ भूना सनाय नमः॥ ॐ स्कंदाय नमः॥ ॐ अंकुशाय नमः॥ ॐ नालाय  
 नमः॥ ॐ यश्रुताय नमः॥ ॐ यश्रुताय नमः॥ ॐ कलत्राय नमः॥ ॐ कर्णिकाय नमः॥  
 ॐ हंसा सनाय नमः॥ ॐ आउल कला सहिताय नमः॥ ॐ पूर्णचन्द्राय नमः॥ ॐ ग्राहिष्ठा  
 सहिताय नमः॥ ॐ गणपतये नमः॥ ॐ गुह्याय नमः॥ ॐ उयादियानमः॥ ॐ रुतयू  
 गमदिवगुर्युगस्थानमः॥ ॐ सनध्वये नमः॥ ॐ लक्ष्मणे नमः॥ ॐ हंसा सनाय नमः॥



ॐ कालाग्निपुत्राय नमः ॥ ॐ यद्वासनाय नमः ॥ ॐ हंसासनाय नमः ॥ ॐ सामायायादि  
धीय गय नमः ॥ शिवनादि चंदनादृत्य नमः ॥ ॥ दक्षाय नमः ॥ ॐ कुरु कुरु  
नमः ॥ ॐ शिवगय नमः ॥ ॐ कास्यंदी देवी साभं ॥ ॐ गंगामहिरविर्ध ॥ ॐ सफरं  
सविमानं नमः ॥ ॐ दिव्यासहिर्गच्छितं ॥ ॐ सलकिसा ॥ ॐ सांगं कलाघात ॥ ॐ हिर्युतं ॥  
ॐ दंष्ट्रा नानिष्ठा नाथ पूजयेत्सासनामलिः ॥ ॐ श्रीपुष्पचन्द्राय ध्यानपुष्पं नमः ॥ ॐ  
ॐ वंद्यमादि ॥ ॐ मार्गजिनमासं सामाय नमः ॥ ॐ घोषमासतिथि श्वनाय नमः  
ॐ माघमासलीगां नमः ॥ ॐ हल्लुप्तमाससिधुनंदन नमः ॥ ॐ वैष्णवाय नमः

शिवमाय नमः ॥ ॐ वैष्णवाय नमः ॥ ॐ शिवमासनिष्ठा पगय नमः ॥ ॐ श्रुतमासं श्रुतिन ॥ ॐ  
वाय नमः ॥ ॐ आषाढमास सर्वरक्ष (धे) नमः ॥ ॐ अवधमास वृन्दवन नमः ॥  
ॐ रावपदमासं कुरुदवाधवाय नमः ॥ ॐ आश्विनमास गगाधिप गय नमः ॥ ॐ  
कार्तिकमासं पूष्पचन्द्राय नमः ॥ शिवनादि चंदनादृत्य नमः ॥ पाद्यादि ॥  
ॐ श्रीपुष्पचन्द्राय पाद्यं नमः ॥ श्रद्धं नमः ॥ श्रवणनीयं नमः ॥ स्नानीयं नमः ॥  
ॐ शिवयन्त्रमाय नमः ॥ ॐ वृन्दवन नमः ॥ ॐ यन्त्राय नमः ॥ ॐ निष्ठा नाथाय नमः ॥  
ॐ शीगां नमः ॥ ॐ नललां कुनाय नमः ॥ ॐ मृगय नमः ॥ ॐ चन्द्रमाय नमः ॥



ॐ सामायनमः॥ ॐ विधवनमः॥ ॐ गानाधियतयनमः॥ ॐ मलिननमः॥ ॐ उग्र  
धीभयनमः॥ ॐ हिमांशवनमः॥ ॐ उग्रमवनमः॥ ॐ अक्रुयनमः॥ ॐ निष्क  
त्रायनमः॥ ॐ आवाहनादिवन्दनादगपुष्पनमः॥ ॐ अक्षमूर्तिपूजा॥ ॐ महादवायच  
द्रमूर्तयनमः॥ ॐ अक्षमूर्तिरयःनमः॥ ॐ अक्षदिदशलोकपालयनमः॥  
ॐ कलानिधनमः॥ ॐ कृपाकत्रामनमः॥ ॐ वाठलभयनमः॥ ॐ मधुलाय  
नमः॥ ॐ मूलचंद्रायनमः॥ ॐ आदिषादिनवग्रहादित्यानमः॥ ॐ अश्विष्मादि  
नक्षत्रयनमः॥ ॐ विष्कम्हादियाग्ययनमः॥ ॐ मघादिनालित्यानमः॥

ॐ प्रणिपदादिगिधित्यानमः॥ ॐ अश्वस्वस्मादिश्रवचित्रंतीवित्यानमः॥ ॐ उग्र  
धनमः॥ ॐ विष्कवनमः॥ ॐ मदागिवायनमः॥ ॐ आवाहनादिवन्दनादगपुष्पनमः  
॥ पुनदवताध्यानपूर्ववग॥ ॐ कक्षकपुनसंकाशं॥ अगपयकनदयं॥ प्रकास्यंदीक्ष  
सामं॥ अगतांसुमदिरुमर्षं॥ सफहंसविमानस्वनादिष्मासहिगंस्त्रिगं॥ मगकिसा  
यधः॥ सांगकलावाठलरियुगं॥ नर्वक्षात्तानिष्मनाथपूजयं॥ आसनामलि॥ ॐ  
सामायध्यानपुष्पनमः॥ ग्यांजलि॥ ॐ अथत॥ अथतांवनधप्रानथ॥ अथ॥ अथ  
धः॥ गगयाधिदिवाहृष्यकर्क्यावनदगनीष्ट्रीसामायगियांजलिपुष्पनमः॥



धातुल वन्द्यमायुता ॥ ॐ सोमा माय नमः ॥ धर्मं दामि मय्याल प्रजायाय ॥ अ  
थ देवमानं ॥ ॐ पावर्ध सर्वगीर्धर्मां गंगमदिसक सागने ॥ स्नाने प्रकल्पिते देव  
त्रि न स्नापयाम्यहं ॥ ॐ सोमा माय स्नानं नमः ॥ वस्तु ॥ ॐ वस्तु लंका नमो दीर्घ रूचिना  
विविध निच ॥ प्रणिज्जं वस्तु मा देव सर्व सुख प्रदाय धी ॐ सोमा माय वस्तु नमः ॥ च  
नन ॥ ॐ सुगंधं देव वृक्षा धर्म कर्दनं घृत वंदनं ॥ प्रणीतं मंगला र्थं यत्नीतां गुण  
नमः ॥ ॐ सोमा माय श्री गुरु वंदनं नमः ॥ सिद्धि ॥ ॐ सिद्धि नतिल कं दिव्यं वातादि  
नमः ॥ ॐ सोमा माय श्री गुरु वंदनं नमः ॥ ॐ सोमा माय सिद्धि नमः ॥

अहं ॥ ॐ अहं गं अहं या कामं धर्म कामार्थ साधकं ॥ अग्नि गं मय नंद हि यत्र  
च यत्रां गि ॐ सोमा माय अहं महं नमः ॥ उज्जका ॥ उज्जका पवी गं सुखं गं गुरु यम  
नाहनं ॥ श्री वा वन धर्मं गुरु सागना मज्ज गुरु गां ॐ सोमा माय युक्ता पवी गं नमः ॥  
गायान ॥ ॐ पुष्पं धातु लमा र्था गं उक्तं गि त्रि संखम ॥ गुरु हा धर्म वंदनं अ  
हं गायन मानम ॥ धातु ल विध पुष्पं नमः ॥ माला पुष्प ॥ ॐ पुष्प माला मिमां  
देव गुरु हा धर्म वंदनं ॥ नाना वंदनं मिमां यत् तस्मै च नमः ॐ सोमा माय  
ला पुष्पं नमः ॥ धर्मं स्तां ॥ ॐ कंदर्प भस्म संज्ञा गं पवित्रं दमनं गुरु ॥ धातु ल तं गुरु



हाद्यदंरुकिमुकिंचदहिमं उं सामायदमनपूर्यनमः॥ पलस्वा॥ उं पद्मास  
नयप्रपूर्यनिष्कनसदाप्रियः॥ गृध्रगानुजगत्यर्पयप्रपूर्यनमानमः॥ उं  
सामायप्रपूर्यनमः॥ उहस्वा॥ उं उत्पलचतुर्लंनिर्दिमांसवसदाप्रिय  
॥ आद्याद्यकषूपूर्यवगृध्रगोपायनाशनं उं सामायउत्पलपूर्यनमः॥ चवस्वा  
॥ उं कुम्भदपूर्यनामानि उषधीनायवेनमः॥ गवप्रियनिष्कनाथनिष्कननः  
मानमः॥ उं सामायकुम्भदपूर्यनमः॥ गुलगा॥ उं इक्ष्वांभाजलेगानि आयुसंगानव  
क्षिगा॥ सदा लक्ष्मीवसंपूर्णगृहाद्यनमस्तुतः॥ उं सामायइक्ष्वांनमः॥ द्वाहास्वा॥

उं नृपदहिउयंदहियत्सदहिवपुष्टिका॥ धनंदहिवसोरागर्धकधुइक्ष्वांनमानमः॥ उं  
सामायकुक्षुपूर्यनमः॥ चस्वा॥ उं वंपकंपूर्यनामानि वाउषायसदाप्रियः॥ गृहा  
द्यदवदवगपूर्यगृध्रनमानमः॥ उं सामायचंपकपूर्यनमः॥ डीलस्वा॥ उं महावीरु  
वताजानीजातीपूर्यगद्वं॥ गवप्रियवनेदवगृध्रगोपायनमः॥ उं सामायजाती  
पूर्यनमः॥ धरुनस्वा॥ उं पूष्याधर्मशारुमंपूर्यलिवप्रीतिकनेजनं॥ उन्मरुकंमया  
दकंगृहाद्यनमस्तुतः॥ उं सामायधरुनपूर्यनमः॥ वलपण॥ उं विल्वपूर्यमहा  
पूर्यपंचपागकनाशनं॥ गंगमस्तानप्रदपूर्यविल्वपणगृहाद्यमं उं सामायविल्वप



नमः॥ धूप चामा॥ ॐ धूपं पलिमलं जं धं दव गा घा दान नन्दनः॥ अत्रि सुहृदं  
धूपं पुनि कुहं सवाहनं ॐ सामा य धूपं नमः॥ मग विय॥ ॐ विष किम नदी शी ति  
संपदा वृद्धि का नकः॥ गृह दी य पुनि कुहं लक्ष्मी गाय त्रि गवा गं ॐ सामा य दी  
प नमः॥ नैव द्य क्वा य॥ ॐ नैव द्य सर्व मन्ना नां पा य सं घृ त सं यु गी॥ सा ती धं न्यं च  
सर्व सां नैव द्य पुनि गृह्ण तां ॐ सामा य नैव द्य नमः॥ हल हल क्वा य॥ हला पन  
सा कदरी ॐ हक ना सम न धि॥ अं न न्रं वृ ण कि स क्वा जी वी न क्वा रु ला नि च ॐ  
सामा य हल मूल नमः॥ ग्व च ग्वा ल क्वा य॥ ॐ अथा द ग गु (घे) क्वा यं न क

विनिर्मितं॥ गृहा ध सर्व ला काना गां वृ लं पुनि गृह्ण तां ॐ सामा य पू जी रु ल गां वृ लं नमः  
॥ जा कि लं व न द व ह ल का स गा उ ग ॥ ॐ दं रु ल पु ष्य नि सं क ल्य सि धि त्र सु॥ गाय हा  
ल॥ ला जां पु ज या मि॥ अर्घ विय लं ख स सा इ इ द्वा हा स्वां वं द ना द ग पु ष्य ग या ज र्घ वि ष  
॥ ॥ स्थ ग व त्रा ह॥ अथा दि॥ वा क्य॥ का स्थ य (ग) ग्रा स्म ग य ध्ना ना म (ध) य स्य श्री म द्वा श्री साम  
प न म स्व न सू य लं न द्वा त्रा पूर्व सं क ल्पि ग य था ल स क गु र रु ल प्रा फि का म न यां श्री  
सामा य ली गां स व ॐ द म र्घ गृ हा ध स्वा हा॥ ॐ लं व दी नां वृ ना पु ष्य रु ल वं द न सं यु गी॥  
अर्घ नि व द य ग म्प जा नू र्णा म च नि ग तः॥ सर्व पा प वि नि र्मु कं सं गा नं ग उ व र्द्ध नं॥ दी ना



चैव संस्तुत अग्निं तममरुत ॥ गृहाधर्ममिदं दत्तं पूर्णचंद्रनमानमः ॥ ॐ ह्यर्थ ॥ म  
 धुल ॥ आय ॥ ॐ सोमोमोमो चन्द्राय नमः ॥ गायत्रिं गमल आस्यं का ग्याय ॥ ॐ श्री पूर्ण  
 चन्द्राय ॥ ॐ चन्द्राय नमः ॥ नाथ जीतां तुलनां च नः ॥ मृगमक चन्द्रमा सोमा  
 विधुस्कात्राधिपः ॥ ॐ ॥ द्विजगतां मृगासु च नः कर्णकपाकनः ॥ पूर्णच  
 न्द्राय यतो निसंक्का का तमया प ॥ ॐ ॥ सर्वपाप विनिर्मुक्तं सामला के सग  
 कृति ॥ ॐ ति श्री स्कंद पुरा ॥ ॐ चन्द्राय नमः ॥ ॐ सर्वपाप विनिर्मुक्तं सामला के सग  
 धर्षण धर्मदिपा च न वि ॥ ॐ ॥ सर्वविधिप निपुर्ण सा सु ॥ मधुलया स्वाध

मधुलया ॥ मधुलया न कलाका मसि ॥ दक्षिण काय ॥ ॐ सामाय यथा गृहा  
 दक्षिण नमः ॥ ॐ गम उ न पूजा ॥ यथा गृहा च न वि ॥ ॐ गत्सर्व विधि पूर्णमा  
 सु ॥ धडा गद वया अलिष क काय ॥ चन्द्र न तिय ॥ स्वां का का या कृते ॥ न्या स लि  
 काय ॥ ॐ सूर्य सादि ॥ अच मन ॥ विष्णु ॥ ॐ ति पूर्णिमा वग विधन नं संपूर्ण  
 ॥ सर्वग ॥ ॐ निगि ॥ सुदि ११ ना ॥ ॐ ध कृद् श्री यदु नाथ न वा या गुरु ॥



ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ द्वा पं पद्मासन चोय ॥ वृष चाय ॥ नोसिय  
चन्दनं तिय ॥ स्नानं दुय ॥ चन्दनञ्च दो ते स्वां लं रव जो ना तय ॥ यद्वा  
दि ॥ कोशपय गोत्रा स्म र मा व व लाल मा मा हं सोमवु त क ते व श्री सो  
म देव ता सु प्र शो न दा रा ज न्न काल सम ये जे न्म धित सोम स चित  
सुच्यमाना रिष्ट शान्ति यथा शान्ति ॥ शुभ फल प्राप्ति काम नया  
श्री सोम देव ता सु प्री त ये पंचो पचार सहित सोमवु त निमित्त  
र्थ वरु द्वा न वे अर्घ्य नमः पुष्प नमः ॥ वृष नमः ॥ ॥ दिव स्नान  
जन्म ल जात रा स लो म स्थिता रिष्ट के न्द्र धु व मो ग त्वा नी ति वा र पूर्व क ॥

पंचामृत ॥ साधौ सा दु दु ज ल स्नानं ॥ ॐ पावनं सर्व ती र्थो र्णा गंगा दि  
स प्ला सा ग रे ॥ स्नानं प्र क ल्पितं देव शरी र रक्षा पया म्य हं ॥ ॐ सोमा  
य स्ना नी यं नमः ॥ वस्त्र ॥ वस्त्रालं कार ये दिव्यं नू षिता विविधा  
४ च निर्वृ प्र शि दु च न्द्र मा देव स वे सु खे प्र दा य णी ॥ ॐ सोमाय वस्त्रं न  
मः ॥ चन्दन ॥ ॐ सु गंधं देव वृ द्वा णा कर्दनं द्यु त चन्दनं प्रति ह  
मं ग ला र्थाय शी तां शु पर मे ष्ठ रः ॥ ॐ सोमाय श्री ख शु चन्दनमः  
सिन्दूर ॥ ॐ सिंदूर तिल कं दिव्यं वा ला दित्य सम पु न्ना म या गृ हा







दशमो वासंतः सुमनसः कुरु

ASHA ARCHIVES

सुमनसः कुरु

1.082

ASHA ARCHIVES



रा सो माय नारी रां मचरो नवेत् ॥ ॐ सो माय सिंदूरं नमः ॥ अक्षत ॥ ॐ अ  
क्षतं अक्षयौ कामं धर्मं कामार्थसाधकं ॥ इक्षितं मे परं देहि परत्रे  
च परां गतिं ॥ ॐ सो माय इदं मक्षतं नमः ॥ जजंका ॥ जज्ञोपवीतं सुखे  
तं तं त्रयमनोहरं ॥ श्री वावरणसूत्रं च सागरामजगत्पतां ॥ ॐ सो  
माय जज्ञोपवीतं नमः ॥ माला पुष्प ॥ ॐ पुष्पमालामिमां देव गृहा  
राधनवृद्धये ॥ नानावर्णसमोपेतं तस्मै च नमः ॥ ॐ सो  
माय माला पुष्पं नमः ॥ श्री चमनया नान्या सयाय ॥ ॐ नमः सो मा







काय नमः॥ ॐ हंसासनाय नमः॥ ॐ षोडशकलासहिताय नमः॥  
 ॐ पूरुचन्द्राय नमः॥ ॐ रोहिणीसहिताय नमः॥ ॐ गणपतये  
 नमः॥ ॐ गुरुभ्यो नमः॥ ॐ जगदिभ्यो नमः॥ ॐ कृतयुगादि चतु  
 र्गुणेभ्यो नमः॥ ॐ सरस्वत्यै नमः॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः॥ ॐ क्षीराय  
 वाय नमः॥ ॐ कालाग्निरुद्राय नमः॥ ॐ यद्वा सनाय नमः॥ ॐ हंसा  
 सनाय नमः॥ ॐ सोमाय रोहिणीयतये नमः॥ आवाहनादि च  
 न्दनाद्यै तपुष्यं नमः॥ ॥ देवताभ्यां नमः॥ ॐ हंशुकपरिसंकाशं श्वे

नर  
 तपद्रकरद्वयं। रुकास्यं द्वीद्वयं सोमं श्वेतां सुमणिरुधिरां॥ सप्त  
 हंसविमोहं रोहिण्यासहितं स्थितां सशक्तिसायुधसांगं कलाषोड  
 शमिर्युतं॥ एवं चान्ता निशा नाथपूजयेत्प्राप्तनामभिः॥ श्रीपूरुच  
 न्द्राय ध्यानपुष्पं नमः॥ ॥ अंगलि॥ एवं हृदयादि॥ श्रीपूरुचन्द्राय  
 यंपादं नमः॥ अर्घ्यं नमः॥ आचमनीयं नमः॥ स्नानीयं नमः॥ ॥  
 षोडशचन्द्रमायुजा॥ ॥ इन्द्रदेवे नमः॥ ॐ चन्द्राय नमः॥ ॐ नि  
 शा नाथाय नमः॥ ॐ क्षीतांशवे नमः॥ ॐ शशालां देवाय नमः॥



ॐ मृगायनमः॥ ॐ चन्द्रमायनमः॥ ॐ सोमायनमः॥ ॐ विधवेनमः॥  
ॐ ताराधिपतयेनमः॥ ॐ त्राशिनेनमः॥ ॐ त्र्योषधीशायनमः॥  
ॐ हिमाशवेनमः॥ ॐ उरुंवेनमः॥ ॐ अत्रायनमः॥ ॐ निशाक  
रायनमः॥ त्रावाहनादिचन्द्रनाक्षत्रपुष्पंनमः॥ त्रिपा॥ ॐ सोमो  
मायनमः॥ ॐ मंत्रराशिं सुपोलपुजायाच॥ ॐ पुष्पं चोदशतात्मान  
ॐ पुष्पं चोदशमाख्यातं उत मंगिरि संनवम्। गृहाणा देवदेवे  
शं अमृतायनमो नमः॥ चोदश विधपुष्पंनमः॥ ॥ क्षपं॥

ॐ क्षपंपलिमलंगं धं देवता द्वाणनन्दनं। अरिष्टहरणं धूपं  
प्रतीकं सवाहं सैमं॥ ॐ सोमाय धूपंनमः॥ दीपं॥ ॐ विपत्तिम  
रणं ज्योतिर्गोपदा वृद्धिकारकः। गृहदीपप्रतिष्ठात्वं लक्ष्मीश्रा  
त्रे तवागुतं॥ ॐ सोमाय दीपंनमः॥ नैवेद्यं॥ ॐ नैवेद्यं सर्वमंनानां  
पायसं दत्तसंयुतं। सालीधान्यं च सर्वेषां नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां॥  
ॐ सोमाय नैवेद्यंनमः॥ फलं॥ फलापनसाकदली इक्षुकेला  
समन्वितां। अन्नं अंशुदाडिमंच जंवीरं जांवीरं च फलानि च॥ ॐ



सोमाय फलं नमः ॥ गन्धर्वा लक्ष्म्य ॥ त्रयोदशगुरोर्युक्तिं यं न त  
परिनिर्मितं ॥ गृहाण सर्वलोकाणां तां वलं पुति गृह्य तां ॥ ॐ सो  
माय फलं तां वलं नमः ॥ अर्धविंशत्संख्यसादुदुद्वाफल  
त्वांचन्दनमृदुतेतय अर्धविंशत् ॥ ॥ अर्धश्वेतवराहकन्ये ॥ ॥  
अर्ध्यादि ॥ काश्यपगोत्रास्मत्मा धवलालनामा हं श्री ह्री श्री सो  
मपरमेश्वरुप्रशान्तद्वारा जन्मकालसमये जन्मस्थितसोमसूचि  
तस्य च मानारिष्यशान्तिं यथाशास्त्रोक्तेषु न फलप्राप्तिकाम  
जन्मलगातगालसोमस्थिता रिष्यकेन्द्रधुवमोगत्रातिनिवारपूर्व ॥

नार्थं ॐ सोमाय इदमर्धं गृहाण स्वाहा ॥ शंखक्षीरां वुनापुष्पं  
फलचन्दनसंयुतं ॥ अर्धं निवेदयेत्तस्य जानुभ्यां मवनिंगत ॥ स  
र्वपापविनिर्मुक्तं संनानं तेजवर्धनं ॥ क्षीरोरुचिं नवसंभूतं सु  
त्रिनेत्रसमुद्भव ॥ गृहाणार्धमिदं देवपुण्यं चन्दनमो नमः ॥  
ताय हो ले ॥ मंरुलदयेके ॥ जपयाय ॥ ॥ ॐ सौ सौ सौ चन्द्रा  
य नमः ॥ ॥ ताय कि गो ल जो स्थं र सो त्र या य ॥ ॥ ॐ श्री पर  
चन्द्राय नमः ॥ इन्द्रचन्द्रो निशा नाथ श्री तां शुश्रूषा लां ह नः ॥



मृगांकचन्द्रमासोमो विष्णुस्ताराधिपः राशिः ॥ द्विजः राजोमृता  
सुश्रुतद्वयत्रेदकपाकरः ॥ पर्यचन्द्रोयः येनानि संध्याकाले स  
दायेहेतु ॥ सर्वयाय विनिर्मुक्त सोमलोकं सगच्छति ॥ ॥ इ  
ति श्री स्कन्दपुराणे चन्द्रोदयब्रह्मनामस्तोत्रं संपूर्णं ॥ ॥ ॥  
अत्र गंधपुष्पाक्षपदीयार्चनविधौ तत्सर्वं विधिपरिपूर्णा मोक्ष  
मण्डलस्य सानंदं य ॥ मण्डलसेकनके ॥ आहोति य ॥ दक्षि  
णाहोति य ॥ ॐ सोमो यथाश्रद्धा दक्षिणा तु न्यमहं संप्रद

दे ॥ यथाश्रद्धा चर्चन विधौ तत्सर्वं विधिपरिपूर्णा मोक्ष ॥  
यवतदेवया अग्निमेषकाय ॥ चिधति य ॥ त्वां कोकयाहुय  
न्यासलिकाय ॥ स्तुत्य साक्षि ॥ काव्यपगोत्रा स्मरमाधेवला  
लना माह श्री सोमपरमेष्ठिरसुब्राह्मणद्वारा जन्मकालसम  
ये जन्मस्थित सोमस्तु चित्तसुखमानारिष्टद्रांति यथा द्रा  
स्तोत्रं शुभपरस्पाष्टि कामनार्थं श्री सोमवृत्ते संपूर्णार्थ  
बृहद्भानवे शुद्धनत पुष्पां नमः ॥ नो सिन्य ॥ विष्णुविष्णु ॥  
जन्मलगततललोमस्थिता हि वृकेन्द्रधुवमोगत्रांति निवारपूर्वक ॥



१३० नमस्तस्मै नमः ॥ १३० अस्य श्रीचन्द्रकवचसंज्ञा गौतम  
 ऋषिः सोमदेवता अनुष्टुप् छंदः श्रीचन्द्रप्रसादसिद्धार्थे नमो वि  
 निर्योगः ॥ ॥ ध्यानम् ॥ कर्पूरस्फटिकावदांतमनिशं पूर्णचंद्रविम्बा  
 ननं मुक्तादासविभूषितेन वपुषा निर्मलशतंतमः ॥ हस्ताभ्यां कु  
 मुदं वरं च दधत नीलात्मकोद्भ्रासितं त्वस्यां कस्य नृगोदिताश्रय

सं ५

सं

गुरां सोमं सुधाक्षि भजे ॥ १ ॥ सोमं चतुर्भुजं वंदे केयूरसकुण्डोज्ज  
 लं ॥ वासुदेवस्य नयनं शंकरस्य च भुषणं ॥ २ ॥ एवं ध्यात्वा जपेन  
 वचनं चन्द्रकवचं बुधा ॥ शशिपातुशिरोदेशेनात्मपातुकलानिधिः  
 ॥ ३ ॥ च ध्यात्वा श्रीचन्द्रमाः पातु श्रोत्रे पातुकलात्मजः ॥ ध्यात्वा त्रिकरपा  
 तुमुषकुमुदवांशव ॥ ४ ॥ पातु कठंच मे सोमो ह्यं भो जैवात्रिके



वतु॥ भुजौ मे चा मृत निधिः पातु पातु स भं निशा करः॥ ५॥ कटिं च तार  
कः पातु डरु शश धरो वतु॥ जानु नी च मृगां को मे पातु ज ये स मां धि ज  
॥ ६॥ पादौ हि स करः पातु पातु चन्द्रो रिलो ल पुः॥ एत द्वि क व चं पुण्यं  
भुक्ति मुक्ति प्रदा य क॥ ७॥ इति श्री व्र स वे वर्त क पुण्यो द क्षि ने र व ।  
एते चन्द्र क व चं ल मा प्र स॥ ॥ शुभ॥ सम्वत् १००३ श्री ल न व दि ऐ ज १



